• वास्तु...

शाम के समयनां करें इनका दान

हर व्यक्ति चाहता है कि उसके जीवन में कभी भी कोई दुख न आए। खासतौर पर उसके ऊपर माता लक्ष्मी की कृपा हमेशा बनी रहे लेकिन कभी-कभी ऐसा होता है कि बहुत मेहनत करने के बाद भी हमें तंगी का सामना करना पड़ता है। वास्तु शास्त्र के अनुसार हम ऐसी गलतियां कर देते हैं, जिससे हमारे जीवन में नकारात्मक ऊर्जा आने लग जाती है और सकारात्मक ऊर्जा की कमी हो जाती है। जैसे, वास्तु शास्त्र के अनुसार आपको शाम के समय कुछ चीजें दान करने से बचना चाहिए।

▶ वास्तु शास्त्र कहता है कि शाम को नमक दान नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से नकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है। नकारात्मक ऊर्जा घर में रहने से घर में गृह क्लेश बढ़ता है और घर के लोगों से सम्बध खराब होते हैं। वास्तु शास्त्र के अनुसार शाम को नमक दान से नकारात्मक ऊर्जा प्रबल हो जाती है, जिससे तरक्की और समृद्धि में बाधा उत्पन्न होती है।

▶ वास्तु के हिसाब से, लहसुन और प्याज तामसिक भोजन माने जाते हैं और उनका संबंध केतु ग्रह से है। शाम को प्याज और लहसुन दान करने से केतु ग्रह का नकारात्मक प्रभाव आपके जीवन पर पड़ता है। इससे आपके बनते काम भी बिगड़ सकते हैं। शाम के समय प्याज-लहसुन दान करने से केतु का दुष्प्रभाव व्यक्ति के जीवन पर पड़ने लगता है और उसके रिश्ते खराब होने लगते हैं।

▶ हल्दी का दान बिल्कुल भी न करें। शाम को हल्दी दान करने से बृहस्पति ग्रह कमजोर हो सकता है। हल्दी को बृहस्पति का कारक माना जाता है और सूर्यास्त के बाद इसका दान आपके कुंडली में बृहस्पति को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। शाम के समय दान देने से कुंडली में गुरु ग्रह कमजोर हो जाता है, इसलिए सूर्यास्त के बाद हल्दी का दान देने से बचना चाहिए।

▶ दूध का दान सूर्यास्त के समय शुभ नहीं माना जाता। ऐसा इसलिए क्योंकि दूध का सम्बध चंद्रमा से है और सूर्यास्त के समय सूर्य कमजोर होता है। जब चंद्रमा कमजोर होता है, तो घर में सुख-शांति नहीं रहती और मन भी अशांत हो जाता है। दूध को लक्ष्मी और विष्णु से भी जोड़ा जाता है। शाम को दूध दान करने से माता लक्ष्मी नाराज होती है।

▶ शाम के समय आपको पैसों का दान भी नहीं करना चाहिए। सूर्यास्त के समय मां लक्ष्मी घर आती हैं। वास्तु शास्त्र के अनुसार अगर आप इस समय किसी को पैसे देते हैं, तो मां लक्ष्मी उनके घर चली जाती हैं। सूर्यास्त के समय मां लक्ष्मी घर आती हैं। ऐसे में अगर आप दूसरों को पैसे देंगे, तो मां लक्ष्मी उनके घर चली जाती हैं।

• हनुमान जी...

अष्ट सिद्धि और नवनिधि

हिंदू धर्म के सभी देवी देवताओं में से एकमात्र हनुमान जी ही है जिन्हें अष्ट सिद्धि और नवनिधि के दाता के रूप में जाना गया है यानी उन्हें कुल अष्ट सिद्धि और नव निधियां प्राप्त हैं। हिंदू धर्म में प्राचीन काल से ही सिद्धियों और दिव्य ज्ञान का विशेष महत्व बताया जाता रहा है। सिद्धि शब्द का अर्थ होता है पूर्णता को प्राप्त करना। लेकिन क्या आपको पता है हनुमान जी को इन सिद्धियों का वरदान किससे मिला था?

मान्यता है कि नियमित रूप से हनुमान चालीसा का पाठ करने वाले व्यक्ति के जीवन से भय और संकट दूर होता है। वहीं गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित हनुमान चालीसा की एक पंक्ति में कहा गया है। अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता, अस बर दीन जानकी माता। दोहे में जिन सिद्धियों की बात की गई है, वह बहुत ही चमत्कारी शक्तियां है और यह सभी अष्ट सिद्धियां हनुमान जी को वरदान के स्वरूप हासिल हैद्ध।

प्रभु श्रीराम के सबसे बड़े भक्त कहे जाने वाले हनुमान जी को आठ सिद्धियों और नौ निधियों का वरदान मां जानकी ने दिया था और कहते हैं कि इन सिद्धियों को संभालने की शक्ति केवल हनुमान जी में ही थी। दुनिया में सबसे कीमती वस्तुएं हैं। कहते हैं कि इन नौ निधियां उन्हें पा लेने के बाद किसी भी प्रकार के धन और संपत्ति की आवश्यकता नहीं रहती हैं। हनुमानजी के पास आठ प्रकार की सिद्धियां थीं। इनके प्रभाव से वे किसी भी व्यक्ति का रूप धारण कर सकते थे। अत्यंत सूक्ष्म से लेकर अति विशालकाय देह धारण कर सकते थे। जहां चाहे वहां मन की शक्ति से पल भर में पहुंच सकते थे।

हनुमान जी की अष्ट सिद्धियां

अणिमा : इस सिद्धि के कारण हनुमान जी छोटे से छोटा यानि कभी भी अति सूक्ष्म रूप धारण कर सकते हैं।

महिमा : इस सिद्धि से हनुमान ने कई बार बहुत ही विशाल रूप धारण किए हैं।

गरिमा : इस सिद्धि से हनुमान जी स्वयं का भार किसी विशाल पर्वत के समान कर सकते हैं।

लघिमा : इस सिद्धि के बल पर हनुमान जी स्वयं का भार बिल्कुल हल्का कर सकते हैं और पलभर में वे कहीं भी आ-जा सकते हैं।

प्राप्ति : इस सिद्धि की के कारण हनुमान जी किसी भी वस्तु को तुरंत ही प्राप्त कर सकते हैं। जैसे- पशु-पक्षियों की भाषा को समझना और आने वाले समय को देख सकते हैं।

प्राकाम्य : इसी सिद्धि की मदद से हनुमान जी पृथ्वी गहराइयों में पाताल तक जा सकते हैं, आकाश में उड़ सकते हैं और मनचाहे समय तक पानी में भी जीवित रह सकते हैं और चिरकाल तक युवा भी रह सकते हैं।

ईशित्व : इस सिद्धि की मदद से हनुमान जी को दैवीय शक्तियां प्राप्त हुई हैं। इस सिद्धि के प्रभाव से हनुमान जी ने पूरी वानर सेना का कुशल नेतृत्व किया था।

वशित्व : इस सिद्धि के कारण हनुमान जी जितेंद्रिय हैं और मन पर नियंत्रण रखते हैं। इसी के प्रभाव से हनुमान जी अतुलित बल के धाम हैं।

कामाख्या मंदिर की अधूरी सीढ़ियां

कामाख्या मंदिर के निर्माण से जुड़ी एक कथा के अनुसार, मां सती के आत्मदाह के बाद भगवान शिव समाधि में चले गए। उसी दौरान तारकासुर नाम के एक दैत्य ने ब्रह्माजी की तपस्या कर बहुत सी शक्तियां प्राप्त की और अपनी उन शक्तियों के बल पर उसने तीनों लोकों में आतंक मचा दिया।

तारकासुर के आतंक से परेशान होकर जब सभी देवताओं ने ब्रह्माजी से उसके अंत के बारे में पूछा तो...

पूर्वती शक्तिपीठ से बहुत सी पौराणिक कथाएं और रहस्य जुड़े हुए हैं। इस मंदिर में हर साल अम्बुबाची मेला लगता है, जिसमें न सिर्फ भक्त बल्कि दूर-दूर से तांत्रिक और साधु भी आते हैं। रहस्य, चमत्कार और आस्था का केंद्र यह मंदिर न सिर्फ भारत में बल्कि पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। लेकिन आपको यह जानकर हैरानी होगी की जिस मंदिर में दुनिया भर से श्रद्धालु आते हैं वहां की सीढ़ियां आज भी अधूरी है। आखिर यह सीढ़ियां आज तक क्यों पूरी नहीं हुई?

● **मंदिर निर्माण की कथा**-कामाख्या मंदिर के निर्माण से जुड़ी एक कथा के अनुसार, मां सती के आत्मदाह के बाद भगवान शिव समाधि में चले गए। उसी दौरान तारकासुर नाम के एक दैत्य ने ब्रह्माजी की तपस्या कर बहुत सी शक्तियां प्राप्त की और अपनी उन शक्तियों के बल पर उसने तीनों लोकों में आतंक मचा दिया। तारकासुर के आतंक से परेशान होकर जब सभी देवताओं ने ब्रह्माजी से उसके अंत के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि भगवान शिव का पुत्र ही इस असुर का वध कर सकता करेगा।

● **कामदेव ने की शिवजी की समाधि भंग**-भगवान शिव की समाधि को भंग करने के लिए कामदेव को बुलाया गया और उन्हें भगवान शिव की समाधि भंग करने को कहा। कामदेव ने अपने बाणों से शिवजी की समाधि भंग कर दी। जिसके बाद आंख खुलते ही महादेव ने क्रोध में आकर कामदेव को भस्म कर दिया। कामदेव की पत्नी रति यह देख कर बहुत दुखी हुई और अपने पति को दोबारा जीवित करने की प्रार्थना करने की। भगवान शिव ने रति का प्रार्थना को स्वीकार किया और कामदेव को पुनर्जीवित कर दिया, लेकिन उसका रूप-रंग और शक्तियां गायब हो गई थी।

● **मां कामाख्या ने किया उद्धार**-कामदेव अपना रूप-रंग और शक्तियों को खोने के बाद बेहद दुखी थे। सौंदर्यहीन कामदेव ने भगवान शिव से प्रार्थना की उन्हें पुन: पहले जैसा बना दें. तब शिवजी ने उनसे कहा कि नीलांचल पर्वत पर सती के जननांग हैं अगर तुम वहां पर एक भव्य मंदिर का बनवाओ तो तुम्हारा रूप-सौंदर्य वापस आ जाएगा। उसके बाद कामदेव ने मंदिर बनवाने के लिए देव शिल्पी भगवान विश्वकर्मा को बुलाया। मंदिर का निर्माण पूरा होते ही कामदेव को अपना रूप-रंग और शक्तियां वापस मिल गई। तभी से इस क्षेत्र को कामरूप के नाम से जाना जाता है।

● **मंदिर की अधूरी सीढ़ियों का रहस्य**-कामाख्या मंदिर के पास अधूरी सीढ़ियां भी मौजूद हैं। जिस लेकर एक कथा प्रचलित है। इस पौराणिक कथा के अनुसार, मां कामाख्या की सुंदरता देख नरकासुर नाम का राक्षस उन पर मोहित हो गया। उसने मां कामाख्या के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा तब देवी ने उससे छुटकारा पाने के लिए एक शर्त रख दी। शर्त यह थी कि अगर नरकासुर एक ही रात में नीलांचल पर्वत से मंदिर तक सीढ़ियां बना पाएगा तो वह उससे विवाह कर लेंगी। नरकासुर ने देवी की शर्त को स्वीकार कर लिया और सीढ़ियां बनाने लग गया। नरकासुर को काम करते देख मां कामाख्या को लगा की वह इस कार्य को पूरा कर लेगा तो उन्होंने एक योजना बनाई जिसमें एक कौवे को मुर्गा बनाकर उस सुबह होने से पहले ही बांग देने को कहा। बांग सुनकर नरकासुर को लगा कि वह शर्त हार गया है, लेकिन जब उसे सच का पता चाल तो वह गुस्से में आकर मुर्गे की बलि दे दी। इसके बाद भगवान विष्णु ने नरकासुर का वध कर दिया। जिस स्थान पर मुर्गे की बलि दी गई उसे कुकुराकता नाम से जाना जाता है।

■ पं. कुलदीप शास्त्री

• कैसा हो...

घर का मंदिर

देवताओं के गुरु बृहस्पति और कुछ विद्वानों के अनुसार मोक्ष कारक केतु का स्थान है घर का ईशान कोण, ईशान कोण में स्वयं भगवान शिव का भी वास माना जाता है। ब्रह्माजी के वरदान के अनुसार हर भूखंड में वास्तु पुरुष की उपस्थिति रहती है और यह वास्तु पुरुष उल्टे मुंह हर भूखंड में लेटे रहते हैं। इनका सिर भी ईशान कोण में ही माना गया है। यही कारण है कि ईशान की पूजा ऋद्धि और सिद्धि दायक मानी गई है। नारद पुराण में भी कहा गया है 'ऐशान्यां मंदिरम और देवानां हि मुखं कार्यं पश्चिमायां सदा बुधै' अर्थात ईशान में मंदिर रखना और देवताओं का मुख पश्चिम दिशा की और रखना ही शुभ है। पूजा करते समय जब व्यक्ति का मुंह पूर्व दिशा अथवा उत्तर दिशा में होता है, तो पूजा अति शीघ्रफलदायी होती है। घर में कलह, सास-बहु में अनबन का दूसरा कारण है, ईशान कोण में शौचालय का होना। दूषित ईशान कोण धन, संतान आदि सुखों का नाश करता है, अत: जब भी नया घर बनवाएं तो ईशान कोण का विशेष ध्यान रखें, पुराने घर में ईशान कोण को दोषमुक्त कराने का प्रयास करें।

• कनकधारा स्तोत्र..

देवी लक्ष्मी के सामने घी का दीपक जलाकर, कनकधारा स्तोत्र का जो व्यक्ति नित्य पाठ करता है, उसके घर में कभी भी धन कि कमी नहीं रहती है। कनकधारा स्तोत्र का पाठ करने से घर धन-धान्य से भरा रहता है और सुख-समृद्धि कि वर्षा होती है। विधि-विधान से पूजा करने से देवी लक्ष्मी प्रसन्न होकर अपने साधक को अथाह धन देती हैं।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित